3 कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

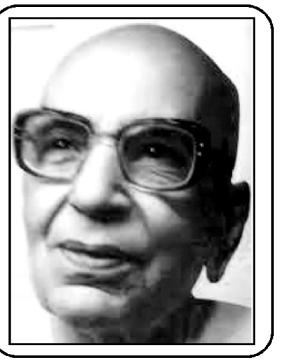

स्वातन्त्र्य-संग्राम की ज्योति और पत्रकारिता की साधना में जिन साहित्यकारों और गद्य-शैलीकारों का अभ्युदय हुआ है, उनमें प्रभाकर जी का स्थान विशिष्ट है। हिन्दी में लघुकथा, संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज की अनेक विधाओं का इन्होंने प्रवर्तन और पोषण किया है। ये एक आदर्शवादी पत्रकार रहे हैं। अतः इन्होंने पत्रकारिता को भौतिक स्वार्थों की सिद्धि का साधन न बनाकर उच्च मानवीय मूल्यों की खोज और स्थापना में ही लगाया है।

लेखक : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—29 मई, 1906 ई0।
- **जन्म-स्थान**—देवबन्द (सहारनपुर)
- **पिता**—पं0 रमादत्त मिश्र।
- **सम्पादन**—'ज्ञानोदय', 'नया जीवन', 'विकास'।
- **लेखन विधा** : गद्य-साहित्य।
- **भाषा :** तत्सम प्रधान, शुद्ध और साहित्यिक खड़ी बोली।
- **शैली** : भावात्मक, वर्णनात्मक, नाटकीय।
- **प्रमुख रचनाएँ**—आकाश के तारे, धरती के फूल, माटी हो गयी सोना, जिन्दगी मुस्कराई।
- **मृत्यु**—9 मई, सन् 1995 ई0।

प्रभाकर जी का जन्म 29 मई, 1906 ई0 में सहारनपुर स्थित देवबन्द ग्राम के एक सामान्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता पं0 रमादत्त मिश्र की आजीविका पूजा-पाठ और पुरोहिताई थी, पर विचारों की महानता और व्यक्तित्त्व की दृढ़ता में वे श्रेष्ठ थे। उनका जीवन अत्यन्त सरल और सात्विक था, पर प्रभाकर जी की माता का स्वभाव बड़ा कर्कश और उग्र था। अपने एक संस्मरण **'मेरे पिताजी'** में लेखक ने दोनों का परिचय देते हुए लिखा है....."वे दूध-मिश्री तो माँ लाल मिर्च"। इनकी शिक्षा प्रायः नगण्य ही हुई। एक पत्र में इन्होंने लिखा है..."**हिन्दी शिक्षा (सच माने) पहली पुस्तक के दूसरे पाठ ख ट म ल खटमल, ट म टम टमटम। फिर साधारण संस्कृत। बस हरि ओम। यानी बाप पढ़े न हम।**" उस किशोर अवस्था में जबकि व्यक्तित्त्व के गठन के लिए विद्यालयों की शरण आवश्यक होती है, प्रभाकर जी ने राष्ट्रीय संग्राम में भाग लेना ही अधिक पसन्द किया। जब खुर्जा के संस्कृत विद्यालय में पढ़ रहे थे, तब इन्होंने प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता मौलाना आसिफ अली का भाषण सुना, जिसका इन पर इतना असर हुआ कि ये परीक्षा छोड़कर चले आये। उसके बाद इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र-सेवा में लगा दिया। ये सन् 1930-32 तक और सन् 1942 में जेल में रहे और निरंतर राष्ट्र के उच्च नेताओं के सम्पर्क में आते रहे। इनके लेख इनके राष्ट्रीय जीवन के मार्मिक संस्मरणों की जीवन्त झाँकियाँ हैं, जिनमें भारतीय स्वाधीनता के इतिहास के महत्त्वपूर्ण पृष्ठ भी हैं। स्वतन्त्रता के बाद इन्होंने अपना पूरा जीवन पत्रकारिता में लगा दिया। 9 मई, सन् 1995 ई0 को इस महान् साहित्यकार का निधन हो गया। प्रभाकर जी के प्रसिद्ध प्रकाशित ग्रन्थ हैं—

रेखाचित्र : 'नई पीढ़ी के विचार', 'जिन्दगी मुस्कराई', 'माटी हो गयी सोना', 'भूले-बिसरे चेहरे'।

लघु कथा : 'आकाश के तारे', 'धरती के फूल'।

संस्मरण : 'दीप जले शंख बजे'।

ललित निबन्ध : 'क्षण बोले कण मुस्काए', 'बाजे पायलिया के घुंघरू'।

संपादन : इन्होंने 'नया जीवन' और 'विकास' नामक दो समाचार पत्रों का संपादन किया। इन पत्रों में प्रभाकर जी ने सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षिक समस्याओं पर आशावादी और निर्भीक विचारों को प्रस्तुत किया।

अन्य विशिष्ट रचनाएँ : 'महके आँगन चहके द्वार' इनकी एक महत्त्वपूर्ण कृति है।

प्रभाकर जी का गद्य इनके जीवन से ढलकर आया है। इनकी रचनाओं में कालगत आत्मपरकता, चित्रात्मकता और संस्मरणात्मकता की प्रमुखता दिखायी देती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में इन्हें अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दिनों में अनेक सेनानियों का संस्मरण इन्होंने लिखा है। इन्होंने लेखन के अतिरिक्त वैयक्तिक स्नेह और सम्पर्क से भी हिन्दी के अनेक नये लेखकों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया था। इनके व्यक्तित्त्व की दृढ़ता, विचारों की सत्यता, अन्याय के प्रति आक्रोश, सहृदयता, उदारता और मानवीय करुणा की झलक इनकी रचनाओं में मिलती है। अपने विचारों में ये उदार, राष्ट्रवादी और मानवतावादी हैं। इसलिए देश-प्रेम और मानवीय निष्ठा के अनेक रूप इनके लेखों में मिलते हैं। इन्होंने हिन्दी गद्य को नये मुहावरे, नयी लोकोक्तियाँ और नयी सूक्तियाँ दी हैं। कविता इन्होंने नहीं लिखी पर कवि की भावुकता और करुणा इनके गद्य में छलकती है। यथार्थ जीवन की दर्दभरी अनुभूतियों से इनके गद्य में भी कविता का सौन्दर्य भर उठा है। इसीलिए इनके शब्द-निर्माण में जगह-जगह चमत्कार है, वार्त्तालाप में विदग्धता है और परिस्थिति चित्रण में नाटकीयता है। इनके वाक्य-विन्यास में भी विविधता रहती है। पात्र और परिस्थिति के साथ इन्होंने वाक्य-रचना बदली है। विनोद की परिस्थिति में छोटे वाक्य, चिन्तन की मनःस्थिति में लम्बे वाक्य और भावुकता के क्षणों में व्याकरण के कठोर बन्धन से मुक्त कवित्वपूर्ण वाक्य-रचना भी की है।

प्रभाकर जी की भाषा सामान्यतया तत्सम शब्द प्रधान, शुद्ध और साहित्यिक खड़ीबोली है। इन्होंने उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के साथ देशज शब्दों एवं मुहावरों का भी प्रयोग किया है। सरलता, मार्मिकता, चुटीलापन, व्यंग्य और भावों को व्यक्त करने की क्षमता इनकी भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। वर्णनात्मक, भावात्मक, नाटक-शैली के रूप इनकी रचनाओं में देखने को मिलते हैं।

प्रस्तुत लेख **'राबर्ट नर्सिंग होम में'** में लेखक ने इन्दौर के राबर्ट नर्सिंग होम की एक साधारण घटना को इस प्रकार मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है कि वह हमें सच्चे धर्म अर्थात् मानव-सेवा और समता का पाठ पढ़ानेवाली बन गयी है। वहाँ इन्होंने तीन सेवारत ईसाई महिलाओं को देखा—मदर मार्गरिट, मदर टेरेजा और सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड। मदर मार्गरिट अत्यन्त बूढ़ी थीं, मदर टेरेजा अधेड़ आयु की और सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड पूर्ण युवती। मदर टेरेजा फ्रांस की थीं और सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड जर्मनी की, दोनों ही देश दो विश्व-युद्धों में विरोधी देश रहे हैं। पर मदर टेरेजा और सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड इस संकीर्ण राष्ट्रीयता से मुक्त थीं। उन्हें एक ही ईसाई धर्म से उदार मानवता और निःस्वार्थ मानव सेवा का पाठ प्राप्त हुआ था। इस प्रकार लेखक ने अपने उदार मानवीय दृष्टिकोण को भी इस लेख में प्रकट किया है।

राबर्ट नर्सिंग होम में

कल तक जिनका अतिथि था, आज उनका परिचारक हो गया; क्योंकि मेरी अतिथेया अचानक रोग की लपेट में आ गयीं और उन्हें इंदौर के राबर्ट नर्सिंग होम में लाना पड़ा।

यह है सितंबर 1951 !

रोग का आघात पूरे वेग में, परिणाम कँपकँपाता और वातावरण चिंता से घिरा-घेरा कि हम सब सुस्त। तभी मैंने चौंककर देखा कि अपने विशिष्ट धवल वेष में आच्छादित एक नारी कमरे में आ गयी है।

देह उनकी कोई पैंतालीस वसंत देखी, वर्ण हिम-श्वेत, पर अरुणोदय की रेखाओं से अनुरंजित, कद लंबा और सुता-सधा।

"लंबा मुँह अच्छा नहीं लगता, बीमार के पास लंबा मुँह नहीं।" आते ही उन्होंने कहा। भाषा सुधरी, उच्चारण साफ और स्वर आदेश का, पर आदेश न अधिनायक का, न अधिकारी का, पूर्णतया माँ का, जिसका आरंभ होता है शिकंजे से और अंत गोद में।

हाँ, वह माँ ही थी : होम की अध्यक्षा मदर टेरेजा, मातृभूमि जिसकी फ्रांस और कर्मभूमि भारत। उभरती तरुणायी से उम्र के इस ढलाव तक रोगियों की सेवा में लवलीन; यही काम, यही धाम, यही राग, यही चाव, और बस यही यही।

उन्होंने रोगी के दोनों म्लान कपोल अपने चाँदनी चर्चित हाथों से थपथपाये तो उसके सूखे अधरों पर चाँदी की एक रेखा खिंच आयी और मुझे लगा कि वातावरण का तनाव कुछ कम हो गया।

तभी एक खटाक और हमारा डॉक्टर कमरे के भीतर। मदर ने उसे देखते ही कहा, "डॉक्टर, तुम्हारा बीमार हँस रहा है।"

"हाँ, मदर! तुम हँसी बिखेरती जो हो।" डॉक्टर ने अपने जाने कितने अनुभव यों एक ही वाक्य में गूँथ दिये।

मैंने भावना से अभिभूत हो सोचा—जो बिना प्रसव किये ही माँ बन सकती है, वही तीस रुपये मासिक के योग-क्षेम पर बीस वर्ष के दिन और रात सेवा में लगा सकती है और वही पीड़ितों के तड़पते जीवन में हँसी बिखेर सकती है।

तीसरे पहर का समय, थर्मामीटर हाथ में लिये यह आयीं मदर टेरेजा और उनके साथ एक नवयुवती, उसी विशिष्ट धवल वेष में, गौर और आकर्षक। हाँ, गौर और आकर्षक, पर उसके स्वरूप का चित्रण करने में ये दोनों ही शब्द असफल। यों कहकर उसके आस-पास आ पाऊँगा कि शायद चाँदनी को दूध में घोलकर ब्रह्मा ने उसका निर्माण किया हो। रूप और स्वरूप का एक दैवी साँचा-सी वह लड़की। नाम उसका क्रिस्ट हैल्ड और जन्म-भूमि जर्मनी।

फ्रांस की पुत्री मदर टेरेजा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ, एक रूप, एक ध्येय, एक रस।

"तुम्हारा देश महान् है, जो युद्ध के देवता हिटलर को भी जन्म दे सकता है और तुम्हारे जैसी सेवाशील बालिका को भी।" मैंने उससे कहा, तो दर्प से दीप्त हो वह स्टैच्यू हो गयी और अपना दाहिना पैर पृथ्वी पर वेग से ठोंक कर बोली—"यस यस।"

वह दूसरे कमरे में चली गयी, तो मदर टेरेजा को टटोला, "आप इस जर्मन लड़की के साथ प्यार से रहती हैं?"

बोलीं, "हाँ, वह भी ईश्वर के लिए काम करती है और मैं भी, फिर प्यार क्यों न हो?" मैंने नश्तर चुभाया—"पर फ्रांस को हिटलर ने पददलित किया था, यह आप कैसे भूल सकती हैं?"

नश्तर तेज था, चुभन गहरी पर मदर का कलेजा उससे अछूता रहा। बोलीं "हिटलर बुरा था, उसने लड़ाई छेड़ी पर उससे इस लड़की का भी घर ढह गया और मेरा भी, हम दोनों एक।" 'हम दोनों एक' मदर टेरेजा ने झूम में इतने गहरे डूबकर कहा कि जैसे मैं उनसे उनकी लड़की को छीन रहा था और उन्होंने पहले ही दाँव में मुझे चारों खाने दे मारा। मदर चली गयीं, मैं सोचता रहा : मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य ने ही कितनी दीवारें खड़ी की हैं—ऊँची दीवारें, मजबूत फौलादी दीवारें, भूगोल की दीवारें, जाति-वर्ग की दीवारें, कितनी मनहूस, कितनी नगण्य, पर कितनी अजेय!

क्रिस्ट हैल्ड के पिता जर्मनी में एक कालेज के प्रिंसिपल हैं और उसने अभी पाँच वर्षों के लिए ही सेवा का व्रत लिया है।

रोगिणी के गहरे काले बाल देखकर उसने कहा, "तुम्हारे काले बाल मेरे पिता के से हैं।" कहा कि वह स्मृतियों में खो सी गयी।

मुझे लगा कि मैं ही क्रिस्ट हैल्ड हूँ। अपने माता-पिता से हजारों मील दूर, एक अजनबी देश में, अकेली, खोयी, छली-सी और मेरी आँखें भर आयीं।

लड़की मेरे आँसुओं में डूब-डूब गयी और किनारा पाने को उसने जल्दी से उन्हें अपने रूमाल से पोंछ दिया। उसकी सदा

हँसती आँखें सम हो नरम हो आयीं, पर जरा भी नम नहीं। मैंने पूछा, ''घर से चलते समय रोयी थीं तुम?'' उसका भोला उत्तर था, ''ना, माँ बहुत रोयी थी।''

फटी आँखों कुछ देर मैं उसे देखता रहा, तब कुछ बिस्किट उसे भेंट किये। बोली ''धन्यवाद, थैंक यू, तांग शू।'' वह अकसर हिन्दी-अंग्रेजी-जर्मन भाषाओं के शब्द मिलाकर बोलती है।

हम सब हँस पड़े और वह हँसती-हँसती भाग गयी।

मदर टेरेजा बातों के मूड में थीं। मैंने उनके हृदय-मानस में चोर दरवाजे से झाँका—''मदर घर से आने के बाद फिर आप घर नहीं गयीं? कभी मिलने-जुलने भी नहीं।'' कान अपना काम कर चुके थे, वाणी को अपना काम करना था, पर मदर ने उसकी राह मोड़ दी और तब मैंने सुनी यह कहानी।

कई वर्ष हुए फ्रांस में विश्व-भर के पूजा-गृहों का एक सम्मेलन हुआ। भारत की दो मदर भी प्रतिनिधि होकर उस सम्मेलन में गयीं। वे फ्रांस की ही थीं, उनके माता-पिता फ्रांस में ही थे। उन्हें पता था कि बरसों बाद हमारी पुत्रियाँ आ रही हैं।

दोनों माताएँ अपनी पुत्रियों का स्वागत करने जहाज पर आयीं, पर विचित्र बात यह हुई कि वे दोनों अपनी पुत्रियों को पहचान न पायीं और आपस में कहती रहीं कि तुम्हारी बेटी कौन-सी है। अंत में उनका नाम पूछा और तब गले मिलीं।

कहानी पूरी हुई तो कई प्रश्न उठे पर मदर टेरेजा उठते न उठते भाग गयीं। निश्चय ही उन दोनों अनपहचानी पुत्रियों में से एक वे स्वयं थीं।

बस, इतना ही एक दिन मैं उनसे और कहला सका।

''घर से बहुत चिट्ठी आती है तो मैं यहाँ के किसी स्थान का फोटो भेज देती हूँ।''

रोग पूरे उभार पर था, रोगी के लिए असह्य। मदर टेरेजा ने कहा, ''तुम्हारे लिए आज विनती करूँगी।'' उनका चेहरा उस समय भक्त की श्रद्धा से प्रोद्भासित हो उठा था।

रोगी ने कहा, ''कल भी करना मदर।'' मदर के स्वर में मिश्री ही मिश्री पर मिश्री कूजे की थी जो मिठास तो तुरन्त देती थी, पर घुलती तुरन्त नहीं और बल का प्रयोग हो तो मसूड़े तक को छील देती है। बोली, ''ना कल उसके लिए करूँगी, जिसे सबसे अधिक कष्ट होगा।'' जैसे हजार वाट का बल्ब मेरी आँखों में कौंध गया।

मैंने बहुतों को रूप से पाते देखा था, बहुतों को धन से और गुणों से भी बहुतों को पाते देखा था, पर मानवता के आँगन में समर्पण और प्राप्ति का यह अद्भुत सौम्य स्वरूप आज अपनी ही आँखों देखा कि कोई अपनी पीड़ा से किसी को पाये और किसी का उत्सर्ग सदा किसी की पीड़ा के लिए ही सुरक्षित रहे।

ऊपर के बरामदे में खड़े-खड़े मैंने एक जादू की पुड़िया देखी—जीती जागती जादू की पुड़िया। आदमियों को मक्खी बनानेवाला कामरूप का जादू नहीं मक्खियों को आदमी बनानेवाला जीवन का जादू—होम की सबसे बुढ़िया मदर मागरिट। कद इतना नाटा कि उन्हें गुड़िया कहा जा सके, पर उनकी चाल में गजब की चुस्ती, कदम में फुर्ती और व्यवहार में मस्ती, हँसी उनकी यों कि मोतियों की बोरी खुल पड़ी और काम यों कि मशीन मात माने। भारत में चालीस वर्षों से सेवा में रसलीन जैसे और कुछ उन्हें जीवन में अब जानना भी तो नहीं।

आपरेशन के लिए एक रोगी आया, ऐश-आराम में पला जीवन। कहने की बेचारे को आदत, सहने का उसे क्या पता, पर कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है? ''मदर मर जाऊँगा'', उसने विह्वल होकर कहा। वातावरण चीत्कार की विह्वलता से भर गया, पर बूढ़ी मदर की हँसी के दीपक ने झपकी तक नहीं खायी।

बोलीं, ''कुछ नहीं, कुछ नहीं, आज है एवरीथिंग (सब-कुछ), कल समथिंग (कुछ-कुछ) और बस तब नथिंग (कुछ नहीं)'' और वे इतने जोर से खिलखिलाकर हँसी कि आस-पास कोई होता तो झेंप जाता।

एक रोगी उन्होंने देखा—चिंता के गर्त से उठ-उभरती रोगिणी। जोर से चुटकियाँ बजाकर वे किलकीं—जि-उती, जि-उती। यह है उनका जी उठी, जी उठी।

यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी अधिक बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल, मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की। भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का तबादला हो गया—अब वह धानी के भील सेवा केन्द्र में काम करेगी। ओह, उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका, पर कर्पूरिका तो अपने सौरभ में इतनी लीन है कि उसे स्वर्ग के अतिरिक्त और कुछ दीखता ही नहीं, सूझता ही नहीं।

वह हम लोगों को मिलने आयी—हँसती, खिलती, बिखरती और फुदकती। यहाँ से जाने का उसे विषाद नहीं, एक-एक नयी जगह देखने का भाव उसके रोम-रोम में, पर मुझे उसका जाना कचोट-सा रहा था वह दूसरे रोगियों से मिलने चली गयी।

इधर-उधर आते-जाते वह दो-तीन बार कमरे के बाहर से निकली, पर फिर एक बार भी उसने उधर नहीं झाँका। मैंने अपने से कहा, ''कोई लाख उलझे, उसे किसी में नहीं उलझना है।''

और तब सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का, सच यह है कि सिस्टर मदर वर्ग का निस्संग निर्लिप्त, निर्द्वन्द्व जीवन पूरी तरह मेरे मानस चक्षुओं में समा गया और फिर मैंने आप ही आप कहा—'सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड, हम भारतवासी गीता को कंठ में रखकर धनी हुए, पर तुम उसे जीवन में ले कृतार्थ हुई।' —**कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

शब्दार्थ

परिचारक = रोग की अवस्था में सेवा करनेवाला। **पैंतालिस बसंत देखी** = आयु पैंतालीस वर्ष के लगभग थी। **अरुणोदय की रेखाओं से अनुरंजित** = लालिमा युक्त। **लंबा मुँह** = उदास चेहरा। **अधिनायक** = शासक। **चाँदनी चर्चित** = अत्यन्त गौर वर्ण। **बिना प्रसव किये माँ** = मदर की उपाधि धारण करनेवाली प्रौढ़ नर्स। **योग-क्षेम** = यहाँ आशय है साधारण जीवन-निर्वाह का वेतन। **दुहिता** = पुत्री। **नश्तर चुभाया** = मर्म को टटोला। **पूजा-गृहों** = ईसाइयों के धार्मिक स्थानों। **कामरूप** = आसाम का पुराना नाम। **कर्पूरिका** = कपूर जैसे गौर वर्णवाली। **तबादला** = स्थानान्तरण। **विषाद** = दुःख। **उत्फुल्ल** = उत्साहयुक्त, प्रफुल्लित।

अभ्यास प्रश्न

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) नश्तर तेज था, चुभन गहरी पर मदर का कलेजा उससे अछूता रहा। बोलीं ''हिटलर बुरा था, उसने लड़ाई छेड़ी पर उससे इस लड़की का भी घर ढह गया और मेरा भी, हम दोनों एक।'' 'हम दोनों एक' मदर टेरेजा ने झूम में इतने गहरे डूबकर कहा कि जैसे मैं उनसे उनकी लड़की को छीन रहा था और उन्होंने पहले ही दाँव में मुझे चारों खाने दे मारा। मदर चली गयीं, मैं सोचता रहा : मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य ने ही कितनी दीवारें खड़ी की हैं—ऊँची दीवारें, मजबूत फौलादी दीवारें, भूगोल की दीवारें, जाति-वर्ग की दीवारें, कितनी मनहूस, कितनी नगण्य, पर कितनी अजेय!

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) मनुष्य-मनुष्य के बीच दीवारें किसने खड़ी की हैं?
(iii) लेखक के प्रश्न के उत्तर में मदर टेरेजा ने क्या कहा?
(iv) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किस बात का संकेत किया है?
(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ख) आदमियों को मक्खी बनाने वाला कामरूप का जादू नहीं, मक्खियों को आदमी बनाने वाला जीवन का जादू–होम की सबसे बुढ़िया मदर मार्गरिट। कद इतना नाटा कि उन्हें गुड़िया कहा जा सके, पर उनकी चाल में गजब की चुस्ती, कदम में फुर्ती और व्यवहार में मस्ती, हँसी उनकी यों कि मोतियों की बोरी खुल पड़ी और काम यों कि मशीन मात माने। भारत में चालीस वर्षों से सेवा में रसलीन, जैसे और कुछ उन्हें जीवन में अब जानना भी तो नहीं।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने क्या अभिव्यक्त किया है?
(iv) मदर मार्गरिट कौन थीं? लेखक ने उनके व्यक्तित्व का वर्णन किस रूप में किया?
(v) लेखक ने नर्सिंग होम की मदर मार्गरिट को जादूगरनी की संज्ञा क्यों दी है?

(ग) मैंने बहुतों को रूप से पाते देखा था, बहुतों को धन से और गुणों से भी बहुतों को पाते देखा था, पर मानवता के आँगन में समर्पण और प्राप्ति का यह अद्भुत सौम्य स्वरूप आज अपनी ही आँखों देखा कि कोई अपनी पीड़ा से किसी को पाये और किसी का उत्सर्ग सदा किसी की पीड़ा के लिए ही सुरक्षित रहे।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक एवं पाठ का नाम लिखिए।

(ii) प्रायः गुणी व्यक्ति का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(iii) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किस भाव को व्यक्त किया है?
(iv) लेखक ने किसके सम्बन्ध में विचार व्यक्त किया है?
(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(घ) यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी अधिक बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल, मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की। भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(ii) कौन-सी ज्योति विश्व की सर्वोत्तम ज्योति है?
(iii) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने किस प्रसंग का वर्णन किया है?
(iv) लेखक ने नर्सों का जीवन कैसा बताया है?
(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' की जीवनी एवं कृतियों का उल्लेख कीजिए। **[2017 MB, 19 CL, 20 ZC, ZG]**
2. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का परिचय निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर दीजिए–
   (क) जन्म-तिथि एवं स्थान, शिक्षा-दीक्षा और साहित्यिक योगदान।
   (ख) प्रमुख कृतियाँ।
3. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का साहित्यिक परिचय दीजिए।

अथवा कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए। **[2020 ZH, ZI, ZL, ZM, ZN]**

4. रिपोर्ताज की परिभाषा देते हुए 'राबर्ट नर्सिंग होम में' पाठ का सारांश लिखिए।
5. निम्नलिखित सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—
   (क) यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा निरत जीवन की!
   (ख) हम भारतवासी गीता को कंठ में रखकर धनी हुए पर तुम उसे जीवन में लेकर कृतार्थ हुई।
   (ग) लम्बा मुँह अच्छा नहीं लगता, बीमार के पास लम्बा मुँह नहीं।
   (घ) मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य ने कितनी दीवारें खड़ी की हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एक आदर्श नर्स में कौन-कौन से गुण होते हैं? इस लेख से उदाहरण बताइए।
2. मदर टेरेजा का परिचय अपने शब्दों में दीजिए। उन्हें मदर कहकर क्यों सम्बोधित किया गया है? लेखक इस विषय में क्या तर्क प्रस्तुत करता है?
3. रिपोर्ताज की दृष्टि से 'राबर्ट नर्सिंग होम में' की समीक्षा कीजिए।
4. मदर टेरेजा से आत्मीयता स्थापित करने के लिए लेखक ने उनसे क्या प्रश्न पूछे और उसे क्या उत्तर मिले?
5. लेखक मदर टेरेजा के किन गुणों से प्रभावित हुआ?
6. लेखक ने भारतवासियों की किन दुर्बलताओं और विदेशियों के किन गुणों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है? ऐसा करने में उसका क्या उद्देश्य है?
7. पारिवारिक और सामाजिक क्षेत्रों में नारी किन-किन रूपों में हमारे सामने आती है? इनमें से कौन-सा रूप सबसे अधिक महान् है?
8. 'राबर्ट नर्सिंग होम में' निबन्ध में लेखक ने नारी के किन गुणों की ओर संकेत किया है?